International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 64-65

मद्यपान एक गंभीर समस्या

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

शोध छात्र, हिंदी, राजकीय स्ना. महा. बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

मध्यपान शब्द सुनते ही अचानक भय का भाव उत्पन्न होता है। यह कितना विचित्र सत्य है कि जिस मनुष्य ने विज्ञान जैसी अद्भूत शक्ति को उत्पन्न कर उसे संजीवनी रूपी जीवन दवाईयॉं, ऐसो–आराम आदि दिया। जीवन को सुखी और खुशहाल बनाया। उसी जीवन मध्यपान मादक पदार्थ के सेवन से नष्ट किया। अत्यधिक परेशान जिन्दगी से उत्पन्न कुंठा, ऊब, संत्रास आदि मनोविकारों से छुटकारा पाने हेतु आज के युग की अधिकांश मनुष्य नशे की गिरफ्त में आते जा रहे है। जैसे–जैसे नशीली पदार्थो के सेवन में वृद्धि हो रही है वैसे इनकी किस्मों में भी वृद्धि होने लगी है। इसके निम्न प्रकार जिसका प्रचलन अत्यधिक बड़ रहा है–शराब, भाग, चरस, हशीश, गांजा, हैरोइन, अफीम आदि। यह सत्य है कि नशीले पदार्थो के सेवनकर्ता चाहे जिस वर्ग या श्रेणी के हो जिस तरह से वे इनका सेवन करते है सबका परिणाम एक ही होता है। वह यह कि सम्पूर्ण जीवन टूटा हुआ, घोर यातनामय गुफा में बंद हो जाता है। जिसमें उसका शरीर, मान–सम्मान, रुपया, परिवार प्रेम भाव की हानि होती रहती है। नशीले पदार्थो का कभी–कभी सेवन धीरे–धीरे एक आदत हो जाती है। इस तरह इसकी गति निरन्तर तीव्र होकर बढ़ने लगती है। यही स्थिति एक लत में बदल जाती हैं। जो सेवनकर्ता को विनष्ट किए बिना शांत नहीं होती है।

मादक पदार्थो का सेवन करने वाला व्यर्थ का जीवन व्यतित करने लिए बाध्य हो जाता है। ऐसा इसलिए कि उसकी क्षमता और उपयोगिता हर प्रकार से समाप्त हो जाती है। लेकिन नशा सेवन की क्षमता और उपयोगिता उसकी और से नहीं घटती हैं। अपितु वह दिन–प्रतिदिन क्या हर समय बढ़ती ही जाती है। इस प्रकार वह न केवल अपने प्रियजनों पर ही भार बनकर रह जाता है। बल्कि स्वंय का भार उठाने में असमर्थ हो जाता है। इस प्रकार उसका जीवन घोर अंधकार में डूब जाता है तो वह मृत्यु ही होती हैं। वैसे तो सरकार के साथ–साथ अनेक सामाजिक संस्थाओं ने भी नशा सेवन के विरुद्व अनेक प्रयास किए है, तथापि नशा उन्मूलन के लिए पत्र–पत्रिकाओं कहानियों और अन्य संचार माध्यमों को आधार बनाकर प्रयास किए जाने अपेक्षित है, जिससे एक स्वस्थ समाज का विकास हो सके।

समाज में मद्यपान एक गंभीर समस्या है। जिसके चलते कितने परिवार उजड़ गये है। लोगों में मद्यपान के बढ़ते प्रभाव में एक भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी है। आज का युवा वर्ग भी इस नशे के गिरफ्त में जकड़ चुका है। समाज में मधपान का प्रचलन कुछ ज्यादा ही है। ठण्ड के दिनों में, बारात में, त्यौहार, कोई उत्सव, मकान के लेन्टर डालने में, नामकरण आदि में बिना शराब और चरस व अन्य प्रकार के नशे के कार्य नहीं किये जा रहे है। शराब की लत चलते लोग अपने खेत, घर, वर्तन, कपड़े, लत्ते, जेवर तक बेच जाते हैं। शराब पीकर समाज व परिवार में अशान्ति फैलाते हैं। मारपीट, गाली, गलौंच, दुर्घटना, पहाड़ों से गिरना इसके भयानक दुष्प्रभाव हैं। कुमाऊँ अंचल के हिंदी कथाकारों ने हिंदी के अन्य कथाकारों की भाँति मधपान का विरोध अपनी कथाओं में व्यक्त किया है। इस लिए मैं उदाहरण के तौर पर कुमाऊँ अंचल के हिंदी कथाकारों को ले रहा हूँ, इन कहानीकारों में प्रमुख हैं। शिवानी, बटरोही, मृणाल पांडे, रमेशचन्द्र शाह, शैलेश मटियानी आदि शिवानी कृत 'जिलाधीश' कहानी ठाकुर रणधीर सिह एक समाज सेवी एवं विरोधी दल का नेता है, फिर भी वह अपनी चरित्रहीनता व आंतक के द्वारा समाज में अशान्ति फैला रहा है। इस कहानी का पात्र ठाकुर रणधीर सिंह चरस का निर्यात करता हैं। समाज के मधपान को फैलाता हुआ चित्रित होता है। चरस निर्यात में कैसे उनका पुत्र निरन्तर योगदान देता रहा हैं।

बटरोही कृत 'लैम्पपोस्ट' कहानी का बाल पात्र मद्यपाई चाचा और चाची की निर्दयता की उदासीनता के बावजूद घर से भागने की बाध्यता पर भी नहीं भागता है क्योंकि उसे अपने मध्यम वर्गीय पिता के आर्थिक दबाव का पूरा बोध है; ''गाँव के कितने लड़के बचपन में ही भागे थे, पर आज कोई होटल में बर्तन मलता था। कोई माली था और कोई फौज में रंगरुट, उसने बड़ें–बड़ें अफसरो को देखा था। वह भी वैसा ही बनना चाहता था। कौने में हल्की लौ में जलते दीये के सामने उसने कई किताबे याद कर ली थी। कुछ साल मार खाकर ही सही, वह पढ़ेगा और अवश्य बड़ा आदमी बनेगा, यही उसने सोचा।''[1]

रमेशचन्द्र शाह कृत 'विनायक' उपन्यास में मद्यपान का विरोध किसी न किसी रूप में चित्रित हुआ है। इस उपन्यास का नायक विनायक द्वारा मद्यपान का विरोध व्यक्त हुआ है। उदाहरण उद्धृत है; '' विनायक के मुँह से यह सुनकर सब सन्न रह गए। यह क्या हो गया विनायक को? यह उसकी भाषा तो नहीं हैं। पल भर को तो हरीश भी सनाका खा गया। लगता है, कुछ ज्यादा ही चढ़ गई है पट्ठे को मिलिटरी रम। पीते क्यों हो साले, जब पचती नहीं?''[2]

मृणाल पांडे द्वारा रचित कहानी 'खेल' में बाल पात्र द्वारा पिता के मद्यपान करने के पश्चात मारपीट व गाली–गलौच चित्रण को व्यक्त करते हुए।

''पापा तो वैसे ही कहते है, लड़ाई करने को, अम्मा रोती है न फिर।''

''पापा गन्दी बाते कहते है।''

''मेरा बाप भी कहता हैं, जब दारु पीके आता हैं न, बौत गन्दी बातें करता है, मारता भी है, हम लोगो को''

''तेरा बाप गंदा है रे ?

''बौत गन्दा है साला''

''बताऊ? उहूँ तुम लोग कह दोगे सबसे, उहुँक नई बताता तुम बड़े लोगों का क्या भरोसा ?

''बता न हम किसी से कहने थोड़े ई जा रहे हैं। क्यों बोलू।''

''नहीं एकदम नहीं। बता न यार! देख फिर चाकलेट भी देगें तुझे।''

''मै घर से भाग जाऊँगा,''[3]

इस कहानी बाल चरित्र के मन में मद्यपायी पिता के कारण आक्रोश भाव व्यक्त हो रहा हैं। बाल चरित्र मद्यपान का विरोध करता है। बटरोही कृत 'भागता हुआ ठहरा आदमी' में चित्रित शालिनी के द्वारा दुःखी होने पर नशे का सहारा लेना व्यक्त हुआ है। वह एक

मुस्लिम परिवार में जन्म लेती है किन्तु उसका पालन–पोषण हिन्दू परिवार मे होता है। फिर भी उस मुस्लिम संप्रदाय के प्रति पर्याप्त निष्ठा है। इसलिए जब उसे अपने पति का हिन्दू होने का पता चलता हैं तो वह अपने पति पर चीख पड़ती है और वह बीस वर्ष पूर्व की ड्रग्स की प्रवृति की ओर लौटती चित्रित हुई है।

कुमाऊँ अंचल से सम्बन्धित कथाकारों ने कहानी साहित्य में ऐसे कई उदाहरण है। जिनके द्वारा कहानी के चरित्रों के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है और उनका चरित्र–चित्रण होता है। इसी प्रकार कुमाऊँ अंचल के कथाकारों ने कुमाऊँ अंचलेतर कहानियों में चाहे वे ग्राम्य जीवन से संबद्ध हो या फिर नगरीय अथवा महानगरीय, उसके चयन में वर्ग एवं क्षेत्र के मद्यपान का विरोध किसी न किसी रूप में चित्रित किया है।

रमेशचन्द्र शाह की अभिभावक (मानपत्र) कहानी में ''गोपू उसी तरह सिर नीचा किए बड़बड़ाया, यहाँ तो आग लगी हुई है। माल गाँव अब वो मालगांव नहीं रहा भईया ? सुरा के नाम से एक दवाई यहाँ फैली हैं। घर–घर में उसी का चलन हैं। जमाना बहुत खराब हो गया हैं भईया।''[4] लेखक ने ग्राम्य जीवन से संबद्ध मद्यपान का विरोध तथा गाँव में फैलती नशे की प्रवृति का चित्रित किया है।

यह सत्य है कि नशीले पदार्थो के सेवनकर्ता चाहे जिस वर्ग या श्रेणी के हो जिस तरह से वे इनका सेवन करते है सबका परिणाम एक ही होता है। वह यह कि सम्पूर्ण जीवन टूटा हुआ, घोर यातनामय गुफा में बंद हो जाता है। जिसमें उसका शरीर, मान–सम्मान, रुपया, परिवार प्रेम भाव की हानि होती रहती है। नशीले पदार्थो का कभी–कभी सेवन धीरे–धीरे एक आदत हो जाती है। इस तरह इसकी गति निरन्तर तीव्र होकर बढ़ने लगती है। मादक पदार्थो का सेवन करने वाला व्यर्थ का जीवन व्यतित करने लिए बाध्य हो जाता है। ऐसा इसलिए कि उसकी क्षमता और उपयोगिता हर प्रकार से समाप्त हो जाती है। लेकिन नशा सेवन की क्षमता और उपयोगिता उसकी और से नहीं घटती हैं। अपितु वह दिन–प्रतिदिन क्या हर समय बढ़ती ही जाती है।

समाज की बड़ी आबादी मद्यपान की गिरफ्त में है। समय–समय पर महिलाएं नशे के खिलाफ सड़कों पर उतरती रही है। स्कूल के बच्चों द्वारा भी समय–समय पर नशामुक्ति रैली निकाली जाती है। मादक पदार्थो को बेचने वालो को भी कानून कठोर दण्ड देती है। हाईकोर्ट तक को नशामुक्ति के लिए हस्तक्षेप करते हुए सरकार को कड़े निर्देश देने पड़ते है किन्तु मद्यपान के विरूद्ध अच्छे प्रबन्ध न कर पाने से इसकी गति निरन्तर तीव्र होकर बढ़ने लगती है।

वैसे तो सरकार के साथ–साथ अनेक सामाजिक संस्थाओं ने भी नशा सेवन के विरुद्व अनेक प्रयास किए है, तथापि नशा उन्मूलन के लिए पत्र–पत्रिकाओं कहानियों और अन्य संचार माध्यमों को आधार बनाकर प्रयास किए जाने अपेक्षित है, जिससे एक स्वस्थ समाज का विकास हो सके।

सन्दर्भ

1. बटरोही – लैम्पपोस्ट (दिवास्वप्न) पृ0 19 समांतर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण।
2. रमेशचन्द्र शाह – विनायक, पृ0 48, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2011।
3. मृणाल पाण्डे – खेल (यानी की एक बात थी) पृ0सं0223,224, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
4. रमेशचन्द्र शाह – अभिभावक (मानपत्र) पृ011, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1992।